International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

किन्नर समुदाय एवं जेंडर का प्रश्न

डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय

सहायक आचार्य हिंदी विभाग, बाबा बरुआ दास पीजी कॉलेज, परुइया आश्रम, अंबेडकर नगर

Abstract

यह लेख किन्नर समुदाय के ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक एवं संवैधानिक स्वरूप का समग्र विवेचन प्रस्तुत करता है। इसमें वैदिक, पौराणिक, जैन, बौद्ध तथा संस्कृत साहित्य में किन्नरों की उपस्थिति और उनकी अवधारणा का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, रामायण, महाभारत तथा मध्यकालीन इतिहास में किन्नर समुदाय की भूमिका का उल्लेख करते हुए आधुनिक भारत में तृतीय लिंग की संवैधानिक मान्यता और उनके अधिकारों पर प्रकाश डाला गया है। लेख का निष्कर्ष है कि किन्नर समुदाय मानव समाज का अभिन्न अंग रहा है तथा उन्हें समान सम्मान, गरिमा और सामाजिक न्याय प्रदान करना लोकतांत्रिक समाज की अनिवार्य आवश्यकता है।

किन्नर हिमालय के क्षेत्र में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है जिसकी प्रधान केंद्र हिमवत् और हेमकूट थे। पुराणों और महाभारत की कथाओं एवं आख्यानों में उनकी चर्चा प्राप्त होती है।कादंबरी जैसे कुछ साहित्यिक ग्रंथों में भी उनके स्वरूप आदि का वर्णन मिलता है।किं+नर से स्पष्ट है उनकी योनि और आकृति पूर्णतः मानव की नही मानी जाती।किन्नरों से तात्पर्य उन पीत वर्ण लोगों से है जिनमें स्त्री-पुरुष भेद भौगोलिक और रक्तगत विशेषताओं के कारण आसानी से नहीं किया जा सकता है।

लैंगिक आधार पर मनुष्य मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित है स्त्री और पुरुष इन्हीं दो वर्गों के साथ-साथ मानव जाति में एक तृतीय लिंगी प्रकृति का मनुष्य भी है जिसे किन्नर कहते हैं ।हमारे समाज में इसे हिजड़ा, छक्का आदि नाम से भी पुकारा जाता है। यह न तो पूर्ण रूप से स्त्री होते हैं न पूर्ण रूप से पुरुष इनमें न संभोग की क्षमता होती है न ही गर्भ धारण की क्षमता होती है।इनमें लैंगिक अंगों का विकास उचित अनुपात में नहीं हो पाता ।भारत के विभिन्न क्षेत्र में किन्नर के लिए भिन्न-भिन्न शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं, जैसे तेलुगु में नपुंसकुंड, कोज्जा या मादा तमिल में थिरू नंगई गुजराती में पवय्य, पंजाबी में खसरा, कन्नड़ में जोगप्पा एवं इसी प्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में छक्का, खोज्जा, हिजड़ा, नपुंसक, थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर इत्यादि शब्द किन्नरों के लिए व्यवहृत किए जाते हैं।

यह पहले ही बताया गया है कि किन्नर हिमाचल में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है ।इनकी उत्पत्ति के दो प्रवाद प्रचलित हैं, एक तो ब्रह्मा जी के अंगुष्ठ भाग से उत्पन्न हुए दूसरा यह कि अरिष्ठा और कश्यप उनके आदि जनक थे।शतपथ ब्राह्मण (७.५.२.३२) में अश्वमुखी मानव शरीर वाले किन्नर का उल्लेख है ।बौद्ध साहित्य में किन्नर की कल्पना मानव मुखी पक्षी के रूप में की गई है ।मानसार में किन्नर के गरुड़ मुखी मानव शरीरीऔर पशुपदी का वर्णन है।

राहुल सांकृत्यायन ने "किन्नर देश "नामक अपनी रचना में किन्नरों के उद्भव की चर्चा की है ।प्राचीन साहित्य में किन्नर को तृतीय प्रकृति या नपुंसक रूप में संबोधित किया गया है ।प्राचीन आचार्य पाणिनि के अष्टाध्याई के खिल भाग में लिंगानुशासन प्राप्त होता है , स्त्री या किन्नर अथवा नपुंसक के भेद को पृथक किया गया है।

"स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमरशः पुरुषः स्मृतः।
उभयोंतरं यच्च तदभावे नपुंसकम।।"1

[26/06, 9:37 pm] Dr. Satya Prakash: इसी प्रकार जैन और बौद्ध साहित्य में भी किन्नर अथवा नपुंसक का पृथक्करण

किया गया है ।"जैन दर्शन में मनुष्य की आत्मा को बंधन में डालने वाले नौ कषायों अर्थात नौ दुष्प्रवृत्तियों का उल्लेख मिलता है जहां कर्म को 'स्त्री वेद', 'पुरुष वेद'तथा 'नपुंसक वेद' के रूप में सम्मिलित किया गया है ।नपुंसक वेद अर्थात स्त्री और पुरुष दोनों के साथ भोग की अभिलाषा उत्पन्न करने वाले मोहनी कर्म।"2 जिसके उदय होने पर पुरुष में स्त्री के साथ-साथ पुरुष से भी संभोग करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है।जिसमें गर्भधारण की क्षमता हो उसे स्त्री तथा जिसमें पूरू अर्थात श्रेष्ठ जनों को उत्पन्न करने की क्षमता हो उसे पुरुष तथा जिनमें न ही स्त्री के गुण हो और न ही पुरुष के गुण हों उन्हें नपुंसक कहते हैं। नपुंसक मनोभाव को स्त्री एवं पुरुष मनोभावों का सम्मिलित रूप भी जैन दर्शन स्वीकार करता है।

समस्त पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि की उत्पत्ति एवं उसके विकास की प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है। जिसमें स्त्री पुरुष उत्पत्ति के साथ-साथ इस तृतीय प्रकृति के इंसान अथवा नपुंसक संतान की उत्पत्ति के संबंध में मिथक एवं अवधारणाएं मिलती हैं। इसी संबंध में सिद्धसिद्धांत पद्धति में बताया गया है कि-

शुक्राधिकेषु पुरुष, रक्ताधिकेषु कन्यका, समशुक्र-रक्ताभ्यां नपुंसकः।अर्थात यदि संभोग के परिणाम स्वरुप गर्भाशय में पिता का वीर्य अधिक संचित हो जाता है तो पुरुष शरीर उत्पन्न होता है यदि माता का राज अधिक संचित होता है तो कन्या शरीर की उत्पत्ति होती है।"3

किन्नरों की उत्पत्ति के संबंध एक मिथक यह भी है कि ब्रह्मा जी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है।इसके अतिरिक्त अरिष्टा और कष्यप ऋषि से भी किन्नरों की उत्पत्ति मानी जाती है।"4

जब हम रामायण काल में देखते हैं तो बाल्मिकि रामायण एवं तुलसी के रामचरितमानस में किन्नरों के उल्लेख मिलते हैं। बाल्मीकि रामायण के उत्तराखंड में वर्णित राजा प्रजापति कर्दम के पुत्र की कथा के माध्यम से किन्नरों की उत्पत्ति के मिथकीय प्रमाण दिखाई देते हैं जिसमें राजा कर्दम का पुत्र शिकार के लिए जंगल में जाता है ।शिकार करते हुए राजा इल उस पर्वत पर पहुंचता है जहां भगवान शिव पार्वती के साथ विहार कर रहे थे ।शिव स्त्री का रूप धारण करते हैं जिसके प्रभाव से उस पर्वत का राजा इल उसके सिपाही एवं सभी जीव-जंतु स्त्री रूप में परिवर्तित हो गए ।इल ने शिव से पुनः पुरुष होने की प्रार्थना की ।भगवान शिव पुरुषत्व देने से इनकार कर दिए किंतु मां पार्वती के निवेदन से पश्चात एक माह स्त्री व एक माह पुरुष के रूप में जीवन निर्वाह करने का वरदान प्राप्त हुआ। इसी रूप में इल एक माह सुंदर स्त्री 'इला' और एक माह राजा 'इल'के रूप में संपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगा।

बौद्ध साहित्य में किन्नर शब्द का प्रयोग शुत्त पिटक के अंतर्गत विमानवत्थु में भी हुआ है, जिसमें लिखा है कि 'चंद्रभागनदीतीरे अहोसी किन्नरीतदा' जिससे स्पष्ट होता है कि पर्वतीय भाग में चिनाव तट पर उस समय किन्नर रहा करते थे।राहुल सांकृत्यायन किन्नरों के विषय में कहते हैं कि "यदि किन्नर का शब्दार्थ बुरा आदमी लें तो अपने शत्रु के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग आज भी हुआ करता है। किसी ने अपने शत्रुओं को यह नाम दिया होगा, यह तो जरूर मालूम होता है कि ऐसा नाम आर्यों की भाषा में होने से यह अर्थाभाव आर्यों का ही हो सकता है तो क्या किन्नर आर्यों से भिन्न थे? हां आदिम रूप में भिन्न जरूर मालूम होते हैं।"5 बौद्ध साहित्य के आधार पर राहुल सांकृत्यायन यह स्पष्ट करते हैं कि किन्नौर देश में रहने वाले लोग शरीर से कुछ विशिष्ट थे।

किन्नरों के विभिन्न लक्षणों के आधार पर पौराणिक ग्रंथों में किंपुरुष एवं किंपुरुषी का भेद स्पष्ट किया गया है ।वात्स्यायन के कामसूत्र में किन्नरों को तृतीय प्रकृति का कहा गया है, जिसके नवम अध्याय में किंपुरुष या किंपुरुषी का भेद स्पष्ट किया गया है।'द्विविधा तृतीयाप्रकृति स्त्रीरूपिणी पुरुषरूपिणी च' अर्थात प्रकृति दो प्रकार की होती है-एक स्त्री के रूप में एक पुरुष के रूप में , वह किन्नर जिसमें स्त्री गुण ज्यादा है ;वह किंपुरुषी और जिसमें पुरुष गुण ज्यादा होता है, वह किंपुरुष होता है।"6

रामचरितमानस में भी किन्नरों का उल्लेख यत्र-तत्र मिलता है ।वनवास जाते समय श्री रामचंद्रजी समस्त अयोध्या वासियों

को मार्ग में वापस लौट जाने को कहते हैं। सभी लौट जाते हैं परंतु किन्नर नहीं लौटते हैं;जब राम ने उनके न लौटने का कारण पूछा तो किन्नरों ने स्पष्ट किया कि आपने नर-नारियों को लौटने का आदेश दिया परंतु हमारे संबंध में कोई आदेश नहीं दिया है। इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं-

"जथा जोगु करि विनय प्रनामा।
विदा किए सब सानुज रामा।।
नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे।
सब सनमानि कृपानिधि फेरे।।"7

ऐसा माना जाता है कि हिजड़ों की इस निश्छल एवं निःस्वार्थ भक्ति भावना को देखकर राम उन्हें वरदान देते हैं कि कलयुग में तुम्हारा ही राज होगा और तुम जिसे भी आशीर्वाद दोगे उसका अनिष्ट नहीं होगा।मानस में इसका बड़ा ही सुंदर प्रसंग है-

"पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोई।
सर्व भाव भज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोई।।"8

अर्थात इस चराचर जगत में कोई भी जीव हो चाहे स्त्री हो पुरुष, नपुंसक, देव दानव, मानव या तिर्यक इत्यादि हो अगर वह संपूर्ण कपट को त्याग कर मुझे भजता है, वह मुझे प्रिय है।

महाभारत काल में किन्नर के रूप में शिखंडी तथा वृहंन्लला(अर्जुन)का उल्लेख आता है ।भीष्म ने अपनी मृत्यु के उपाय के रूप में बताया कि यदि शिखंडी मेरे सामने आ जाए तो मैं उस पर शस्त्र नहीं उठाऊंगा।

"शिखंडिनं तमासाद्य भरतानां पितामहः।
अवर्यतज्ज संग्राम स्त्रीत्वं तस्यात्रुसंस्मरन्।।"9

ऐसी कथा प्रचलित है कि शिखंडी पूर्व जन्म का स्त्री था और इस जन्म में किन्नर के रूप में पैदा हुआ था परंतु आकाशवाणी हुई कि उसका लालन-पालन पुरुष के रूप में हो जब भीष्म से उनकी मृत्यु का उपाय पूछा गया तो उन्होंने बताया कि-

"शिखंडी समरामर्षी सूरश्च स्त्रमितिंजयः।
यथा भवस्त्री पूर्व पश्चात् पुंस्त्वं समागताः।"10

मध्यकालीन इतिहास में मुस्लिम शासन में हरम की प्रथा प्रचलित थी जिसमें स्त्रियों की देखभाल के लिए किन्नरों को रखा जाता था ।खिलजी वंश के शासक अलाउद्दीन खिलजी के हरम में भी किंपुरुष और किंपुरुषी होती थी जिन्हें खोजा ,क्लीव एवं खोजा, सरा से संबोधित किया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी के विश्वासपात्र सेनापति मलिक काफूर को इतिहासकारों ने किन्नर माना है।" सुल्तान खिलजी मलिक काफूर की सुंदरता पर फिदा था और उसे खंभात की लड़ाई के बाद बतौर गुलाम खरीदा था इससे पता चलता है कि अलाउद्दीन खिलजी के मालिक कफूर के साथ समलैंगिक संबंध थे इसी कारण उसे प्रधान सेना नायक भी नियुक्त किया गया ।"11

1993 में ट्रांसजेंडर समुदाय ने अपनी मान्यता के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी जिसमें 15 अप्रैल 2014 को सुप्रीम कोर्ट के उसे फैसले से सुखद अंत हुआ जिसमें इस समुदाय को जेंडर के रूप में मान्यता देते हुए इन्हें थर्ड जेंडर का नाम दिया गया।जस्टिस के.एस.राधकृष्णन ने संविधान के अनुच्छेद 14 के अंतर्गत ट्रांसजेंडर समुदाय को तीसरे लिंग का दर्जा देते हुए कहा -"जेंडर आईडेंटिटी एक व्यक्ति के स्वयं की पहचान को एक पुरुष एक महिला ट्रांसजेंडर या किसी अन्य पहचान करने वाली श्रेणी के रूप में संदर्भित करता है।ट्रांसजेंडर उस व्यक्ति को भी संदर्भित करता है जिसके लिंग की पहचान या उनके जन्म के समय, उनके जन्म के लिए सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है।ट्रांसजेंडर समुदाय भी भारत के नागरिक हैं उन्हें भी अपने समुदाय के लिए सम्मान का अवसर एवं अधिकार है।"12

विस्तृत अध्ययनों के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस धरती पर थर्ड जेंडर समुदाय की उपस्थिति सृष्टि कि

उस आदि समय से होता है जब से मानव की सत्ता प्रमाण के रूप में उपलब्ध होती है ।दुनिया के सभी प्राचीन ग्रंथो में चाहे वह धार्मिक ग्रंथ हो या फिर ऐतिहासिक उनकी उपस्थिति के प्रमाण सुलभ हैं। मानव समाज में इनका वजूद देवता के रूप में विशेष मानव के रूप में, राज दरबार के सहायकों के रूप में, सेवकों के रूप में रणक्षेत्र में उपस्थित योद्धाओं के रूप में तथा विविध किरदार के रूप में उनकी उपस्थिति रही है। आधुनिक काल में अस्तित्व की गरिमापूर्ण प्रतिष्ठा के लिए इन्हें भले ही संघर्ष करना पड़ा लेकिन इन संघर्षों की परिणति मशाल की लौ की भांति प्रकाशित हुई है।निश्चित ही उनके जीवन को एक नई दिशा की तरफ ले जाएगी जो इन्हें न केवल गरिमा पूर्ण जीवन,स्वावलंबन को प्रदान करेगी बल्कि इनके संघर्षों को और अधिक मुखर करेगी।

संदर्भ सूची-

1. लिंगानुशासन(शब्दों के लिंग ज्ञान करने का शास्त्र)संस्कृत भाषा ...hmt
2. सोहन राज तवर,जैन कर्म विज्ञान और मनोविज्ञान, पृ.सं.22,Read Warthy Publication 2011.
3. महायोगी श्री गोरक्षनाथ विरचित सिद्ध सिद्धांत पद्धति, संपादक एवं अनुवादक, स्वामी द्वारिका दास शास्त्री,चौखंबा, विद्या भवन वाराणसी-2014
4. नागेश मिश्रा,लेख-ब्रह्मा जी की छाया से हुई जिनकी उत्पत्ति, गजब post.hmt.
5. राहुल सांकृत्यायन,किन्नर देश में, पृष्ठ-346
6. http://mainstree.com/kamasutra/kamasutra-part2-9.hmt,08-12-2017
7. [26/06, 9:37 pm] Dr. Satya Prakash: 7- तुलसीदास रामचरितमानस,अयोध्या कांड 398/4
8. 8-वही,उत्तरकाण्ड87(क)
9. महाभारत भीष्म पर्व, 69वां सर्ग,पृ. सं. 453,श्लोक-29 भाषा अनुवाद सहित,ऋषि कुमार(सनातन धर्म मंत्रालय)
10. वही,श्लोक 21
11. http://www.namanbharat.com/19872/why-allauddin-khilji killed-malik gafur-here-the-reason/,08-12-2017
12. नेशनल लीगल सर्विसेज अथॉरिटी बनाम यूनियन ऑफ़ इंडिया व अन्य (2014) s एस.एस.सी. 438